शोध पत्रिकाओं में बोलचाल की भाषा में सारांश की मांग

हाल ही में *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में एक आलेख प्रकाशित हुआ है जिसमें एक अनोखा विचार रखा गया है। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के लॉरेन कुने और जूलियन ओल्डेन ने इस आलेख में अनुरोध किया है कि सारी शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों के साथ एक सारांश छपना चाहिए और यह सारांश ऐसी भाषा में होना चाहिए जो सामान्य लोगों की समझ में आ सके। इस अनुरोध को एक ऑनलाइन पीटिशन के रूप में सोशल मीडिया में प्रसारित भी किया गया है।

ओल्डेन और कुने का कहना है कि ऐसे सारांश खास तौर से इकॉलॉजी और प्रकृति संरक्षण से सम्बंधित शोध पत्रिकाओं में बहुत ज़रूरी हैं। ये सारांश वैज्ञानिकों और आम लोगों के बीच व्यापक और पारदर्शी संवाद के साधन बनेंगे। ओल्डेन ने एक साक्षात्कार में कहा है कि इकॉलॉजी पत्रिकाओं में इस तरह के सारांश से बड़े पैमाने पर पाठकों, खास तौर से पत्रकारों और नीतिकारों तक नवीनतम सूचनाएं पहुंचाने में मदद मिलेगी। अब तक 100 से ज़्यादा लोग इस पीटिशन पर हस्ताक्षर कर चुके हैं।

वैसे *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में किसी भी शोध पत्र के साथ एक सारांश प्रकाशित करना ज़रूरी होता है जिसे वे 'महत्व का वक्तव्य' कहते हैं। इसके अलावा *प्लॉस बायोलॉजी* नामक पत्रिका में भी गैर-तकनीकी 'लेखकीय सारांश' शामिल किया जाता है। मगर ओल्डेन का कहना है कि ये इक्का-दुक्का उदाहरण तो अपवाद हैं।

कई वैज्ञानिकों और संपादकों ने इस विचार का समर्थन किया है। जैसे *इकॉलॉजी* नामक शोध पत्रिका के संपादक डोनाल्ड स्ट्रॉन्ग मानते हैं कि यह कदम सही होगा और उनकी पत्रिका देर-सबेर यह कदम उठाएगी मगर उसमें समय लगेगा। उनको लगता है कि हर शोध पत्र के लिए ऐसा करना मुश्किल होगा क्योंकि उनमें कई तकनीकी शब्दों का इस्तेमाल होता है जिन्हें चंद शब्दों में समझाना मुश्किल होता है।

इसके अलावा, एक समस्या यह भी बताई जा रही है कि वैज्ञानिकों पर काम का बोझ काफी होता है और उनसे एक और मांग करना थोड़ा अनुचित होगा। यह भी हो सकता है कि सारे वैज्ञानिक इस तरह का सारांश तैयार करने में सक्षम न हों। सबसे रोचक प्रतिक्रिया कनाडा के विक्टोरिया विश्वविद्यालय की इकॉलॉजीवेत्ता एरिन जेकब ने दी है। उनका कहना है कि एक विद्यार्थी के रूप में उन्हें विज्ञान के आलेख पढ़ने में बहुत दिक्कत होती थी, इसलिए उन्हें लगता है कि ऐसे सारांश शोधकर्ताओं के लिए भी बहुत उपयोगी साबित होंगे। साथ ही वे स्वीकार करती हैं कि इस मामले में संपादकीय सहायता की ज़रूरत होगी। पत्रिकाओं को चाहिए कि वे शोधकर्ताओं को ऐसे सारांश बनाने में मदद करें। ***(स्रोत फीचर्स)***